ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

रावला तहसील में सेवा कार्यो का पदानुक्रमीय अध्ययन

डॉ. जयदेव प्रसाद शर्मा, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़
रिन्कू रानी, शोधार्थी, श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ़

प्रस्तावना

अध्ययन के लिए किसी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संकल्पना को एक आधारभूत अवधारणा माना जाता है। किसी क्षेत्र की अधिवासीय पृष्ठभूमि में ऐसी अवस्थिति जो अपने चारों ओर के समीपवर्ती क्षेत्रों को वस्तुऐं एवं सेवा प्रदान करती है, उसे सेवा केन्द्र कहते हैं।अध्ययन के लिए किसी क्षेत्र में सेवा केन्द्रों की संकल्पना को एक आधारभूत अवधारणा माना जाता है। किसी क्षेत्र की अधिवासीय पृष्ट भूमि में ऐसी अवस्थिति जो अपने चारो ओर के समीपवर्ती क्षेत्रो को वस्तुएं एवं सेवाऐं प्रदान करती है, उसे सेवा केन्द्रो के रूप में माना जाता है। ग्रामीण सेवा केन्द्र वे अधिवास होते है, जो मुख्य रूप से अपने चतुर्दिक विस्तृत क्षेत्र में उपयोक्ताओं को सेवाए प्रदान करने तथा उत्पादन वितरण को अपनी और आकर्षित करते है। अल्प विकसित अर्थतन्त्र में इनकी पहचान एवं निर्धारण अति आवश्यक है क्योकि यह ऐक प्रकास बिन्दु की तरह होते है, जिनसे विकास की किरण से इनका सम्पूर्ण पृष्ठ प्रदेश विकसित होते है, लेकिन ग्रामीण सेवा केन्द्रो का अभिनिर्धारण एक कठिन कार्य है। अतः सेवा केन्द्रो को क्षेत्र की प्रकृति के अनुरूप किसी न किसी आधार पर अभिनिर्धारित करने की आवश्यकता है। सेवा केन्द्र स्थल के लिए प्रयुक्त पर्यायवाची शब्दो में सर्वाधिक प्रसिद्ध है, जैसे बाजार केन्द्र का प्रयोग भी सेवा केन्द्र के रूप में होता है क्योकि प्रत्येक सेवा केन्द्र के लिए बाजार का कार्य करना आवश्यक है। अतः सेवा केन्द्र द्वारा सम्पन्न किये गये कार्य एवं समीपवर्ती क्षेत्र को प्रदान की जाने वाली सेवाएं ही इसके निर्धारण का आधार है। व्यापार एवं वाणिज्य सेवा केन्द्रो के कार्य सर्वव्यापी हो तथा जनसंख्या एवं उनकी संरचना उनके सापेक्षिक महत्व को प्रदर्शित करती है। चयनित शोध क्षेत्र रावला तहसील में सेवा केन्द्रो का अभिज्ञान सेवओ की समुपस्थिती एवं अन्योन्या ्श्रितता के आधार पर किया गया है। इस संदर्भ में यह स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में सेवाओ की मात्रा (संख्या) को ध्यान में नही रखकर इस बात का ध्यान रखा गया है की संख्या कितनी है।

अध्ययन क्षेत्र –

भारत के सबसे बड़े राज्य के उत्तरी छोर पर अवस्थित गंगानगर जिलें के अन्तिम छोर पर अवस्थित रावला तहसील आर्थिक व सामरिक दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण तहसील है। रावला तहसील 27°11′ से 29° 10′ उत्तरी अक्षांश तथा 71°54′ से 73°12′ के पूर्वी देशान्तर के मध्य अवस्थित हैं। रावला तहसील के दक्षिणी पूर्वी सीमा में बीकानेर जिले की खाजुवाला व छतरगढ़ तहसील, उत्तर में घड़साना तहसील व पश्चिम में पाकिस्तान के बहावलपुर जिले की फोर्ट अब्बास तहसील से सीमांकीत हैं। तहसील का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 623.26 वर्ग किलोमीटर हैं, जो जिले के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 6.34 प्रतिशत हैं। अध्ययन क्षेत्र की समुद्रतल से औसतन उंचाई 168 से 227 मीटर हैं। तहसील का धरातल लगभग समतल हैं, कुछ क्षेत्रों में बालु रेत के टीले पाए जाते हैं, अध्ययन क्षेत्र का भू–भाग मरुस्थल मे स्थित होने के कारण उष्णकटिबन्ध मरुस्थल की जलवायु लिए है, यहां औसतन तापमान ग्रीष्मकालीन में न्युनतम 18 डिग्री सेन्टीग्रेट व अधिकतम 48 डिग्री सेन्टीग्रेट तथा शीतकालीन न्युनतम 2 डिग्री सेन्टीग्रेट व अधिकतम 28 डिग्री सेन्टीग्रेट रहता है, यहां सामान्य वर्षा 25 सेन्टीमीटर व वास्तविक वर्षा 40 सेन्टीमीटर के आसपास होती है, अध्ययन क्षेत्र में मृदा दोमट, रेतीली लोम, व रेतीली पाई जाती हैं। एक समय मरुस्थल यह भाग इन्दिरागांधी नहर परीयोजना कि अनुपगढ़ शाखा से समुन्नत कृषि प्रदेश में परिवर्तीत हो गया, जिससे क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जिन्सों का उत्पादन होने लगा, अध्ययन क्षेत्र 1980 के दशकों में कृषि (कपास, गेहु व सरसों व गन्ना) के उत्पाद में प्रथम स्थान पर था, जिस कारण क्षेत्र को " हरित पट्टी " के उपनाम से जाना जाने लगा, समय के अनुसार क्षेत्र में धीरे–धीरे नहरी पानी के अनियमित प्रवाह एवं मानसुन के अनिश्चित व अनियमीतता के कारण क्षेत्र के कृषि पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसके लिए वर्ष 2004 व 2006 में नहरी सिंचाई पानी के लिए रावला व घड़साना में बहुत बड़ा आन्दोलन हुआ।

वर्ष 2017 में क्षेत्र को तहसील का दर्जा प्राप्त हुआ, वर्ष 2011 के अनुसार क्षेत्र अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या 85915 है, जिसमें पुरुष जनसंख्या 45300 व महिला जनसंख्या 40615 हैं। अध्ययन क्षेत्र में जन घनत्व 124 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर व लिगांनुपात 896 हैं।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

मानचित्र–1.1

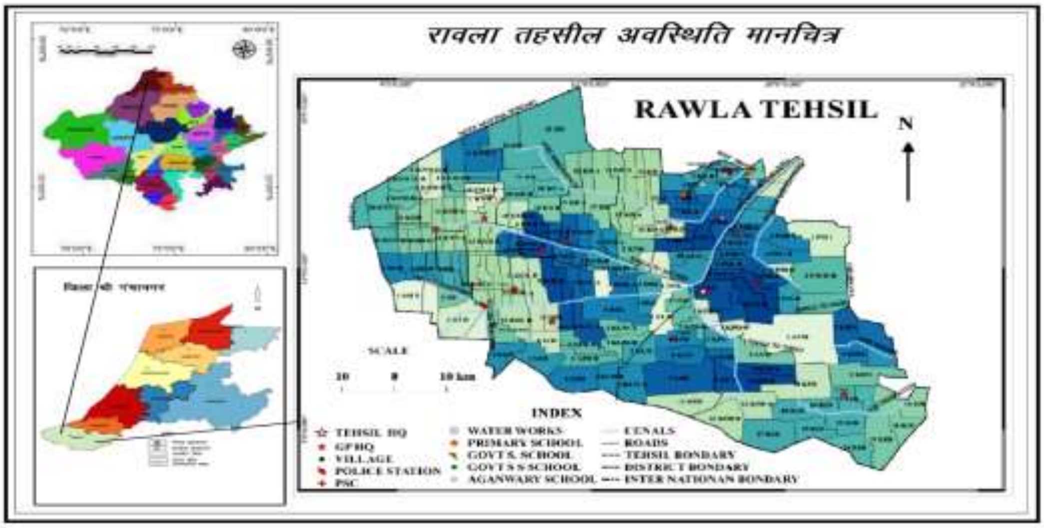

उदेश्य –

1. रावला तहसील में ग्रम पंचायतवार सेवा केन्द्रों के सेवा क्षेत्रों को जानना।
2. अध्ययन क्षेत्र में मे सेवा केन्द्रो का अध्ययन करना।
3. उन क्षेत्रो को खोजना जंहा सेवाओं में कमी हैं।

विधि तंत्र –

प्रस्तुत अध्ययन द्वितीयन आँकड़ो पर आधारित हैं, जिनके आँकड़े कार्यालय ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी रावला एवं विभिन्न प्रकार के जनगणना प्रकाशन तथा शासकीय अभिलेखों से प्राप्त किऐ गऐ, प्राप्त आँकड़ो से उपयुक्त विधियों से गणना की गई एवं प्राप्त परिणाम को आवश्यकतानुसार मानचित्रों, आरेखों एवं तालिकाओं द्वारा प्रदर्शित किया गया।

सेवा केन्द्रो का पदानुक्रम :–

पदानुक्रम से तात्पर्य गांवो के अधिवासो को उनके आकार तथा उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों तथा उपलब्ध सेवाओं के आधार पर विभिन्न वर्गो में विभाजित करना है क्षेत्रीय नियोजन में पदानुक्रम के आधार पर विभिन्न वर्गो में विभाजित करना है। नियोजन में पदानुक्रम का सबसे महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी क्षेत्र में कोई नई सेवा उपलब्ध करवाती है तो वह किस अधिवास में हो, इसका निर्धारण पदानुक्रम के आधार पर किया जाता है।

अध्ययन क्षेत्र में सेवाओ एवं केन्द्रो का पदानुक्रम निर्धारण करने के लिए कुल 190 गावों के अधिवासो 24 प्रकार की सेवाओ का समावेश किया गया है जो 9 समुह में इस प्रकार है।

1 **शैक्षणिक सेवाएं**
1. प्राथमिक विद्यालय
2. आगनबाड़ी पाठशाला केन्द्र
3. उच्च प्राथमिक विद्यालय
4. माध्यमिक विद्यालय
5. उच्च माध्यमिक विद्यालय

2 **चिकित्सा सेवाएं**
1. प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
2. उप स्वास्थय केन्द्र
3. सामुदायिक स्वास्थय केन्द्र
4. आयुर्वेदिक औषधालय

3 **प्रशासनिक सेवाएं**
1. ग्राम पंचायत
2. पुलिस थाना
3. पुलिस चौकी

4 **संचार सेवाएं**
1. पोस्ट ऑफिस व संचार सेवाएं
2. बस स्टैण्ड

5 **बैंकिग सेवाएं**
1. बैंक
2. सोसाईटी/बीज वितरण केन्द्र
3. मिनी बैंक

6. **विधुत सेवाएं**
7. **जल प्रदान योजनाएं**
8. **सहकारिता**
9. **पशु चिकित्सा सेवाएं**
1. पशु स्वास्थ्य केन्द्र
2. मुख्य पशु स्वास्थ्य केन्द्र

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

सेवाओं का पदानुक्रमः—

शोध के लिए चयनित अध्ययन क्षेत्र के प्रत्येक गांव की उपस्थिति एवं अनुपस्थिति को सारणीबद्ध किया गया, इसके बाद यह शोधकर्ता ने आर्थिक भार विधि के आधार पर विभिन्न सेवाओं का भार ज्ञात किया गया, जो निम्न सूत्र से आंकलित है।

$$wi = \frac{n}{fi}$$

ॅपत्र कार्य का भार

छत्र अधिवासो की कुल संख्या

थ्पत्र सेवा विशेष कि संख्या

तालिका–6.1 रावला तहसील में सेवा सुविधाओं का कार्यिक भार व तुलनात्मक भार

क्र.स.	सेवा सुविधाएं	कुल अधिवास जहाँ सेवा सुविधा उपलब्ध है	कार्यिक भार	तुलनात्मक भार	
1	आगंनबाड़ी पाठशाला	71	2.68	1.00	I
2	प्राथमिक विद्यालय	69	2.75	1.03	
3	जल प्रदान योजनाएं	24	7.92	2.96	
4	ग्राम पंचायतें	14	13.57	5.07	II
5	डाक व संचार	14	13.57	5.07	
6	उच्च माध्यमिक विद्यालय	13	14.62	5.46	
7	उप पशु चिकित्सा केन्द्र	12	15.83	5.92	
8	उच्च प्राथमिक विद्यालय	10	19.00	7.10	
9	उप स्वास्थ्य केन्द्र	10	19.00	7.10	
10	बैंक	6	31.67	11.83	III
11	गैस ऐजेन्सी	2	95.00	35.50	
12	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	1	190.00	71.00	IV
13	प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सा केन्द्र	1	190.00	71.00	
14	पशु चिकित्सा केन्द्र	1	190.00	71.00	
15	माध्यमिक विद्यालय	1	190.00	71.00	
16	सोसाईटी / बीज वितरण केन्द्र	1	190.00	71.00	
17	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	1	190.00	71.00	
18	प्रशासनिक	1	190.00	71.00	
19	पुलिस थाना	1	190.00	71.00	
20	पुलिस चौकी	1	190.00	71.00	
21	सासाईटी बैंक	1	190.00	71.00	
22	आयुर्वेदिक औषाधालय	1	190.00	71.00	

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

सेवाओं का पदानुक्रमः—

शोध के लिए चयनित क्षेत्र रावला तहसील में सेवाओ के आधार पर जिस सेवा की संख्या अधिक है उसे कम भार प्राप्त हुआ है जबकि सेवा की संख्या कम होने पर अधिक भार प्राप्त हुआ है। अध्ययन क्षेत्र में आगंनबाड़ी पाठशाला की संख्या 71 है उसे पदानुक्रम में पदानुक्रम के निर्धारण में सम्मिलित 22 सेवाओ में आगंनबाड़ी पाठशाला का कार्मिक भार सबसे कम 2..68 है इस न्यूनतम महत्व के कार्यिक भार से बनी सेवाओं के कार्यिक भार को भाग देकर तुलनात्मक भार ज्ञात किया गया जो (तालिका 6.1) से स्पष्ट है, जिसे आरोहीक्रम में व्यवस्थित करने पर चार विच्छेदन बिन्दू दिखाई पड़ते है, इन विच्छेदन बिन्दुओ के आधार पर सेवाओ को चार पदानुक्रम मे विभाजित किया है।

तालिका 6.2 रावला तहसील में सेवा केन्द्रो का पदानुक्रम

क्र.स.	तुलनात्मक भार	सेवा पदानुक्रम
1	अति उच्च	9
2	उच्च	7—9
3	मध्यम	5—7
4	निम्न	2—7
5	अति निम्न	2

शोध क्षेत्र में सम्मिलित पदानुक्रम अव्यवहारिक है क्योकि कुछ वृहत आकार के गांवो में भी उच्च कोटि की सेवाए पाई जाती है जबकि कम जनसंख्या एवं कम क्षेत्रफल वालें गावो में भी उच्च कोटि की सेवाऐ पाई जाती है कुछ ऐसे भी गांव है जहा कोई भी सुविधाएं नहीं है।

पदानुक्रम से अभिप्राय गांव (अधिवासों) जो आकार उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों तथा वहा उपलब्ध सेवाओ के आधार पर विभिन्न वर्गो में विभाजित करना है। किसी भी क्षेत्र में कोई नई सेवा या सुविधा उपलब्ध कराने में अधिवास के निर्धारण में पदानुक्रम सहायक होता है अध्ययन क्षेत्र में 14 सेवा केन्द्रो के पदानुक्रम हेतु कार्यो एवं सेवाओ के आधार पर अलग—अलग संचयी भार ज्ञात किया गया, इसके संचयी अंक को आरोही क्रम मे व्यवस्थित किया गया है।

तालिका 6.3 रावला तहसील में विभिन्न स्तर के केन्द्रीय स्थानो का पदानुक्रम

क्रमांक	केन्द्रीय गांव	संचयी अंक	श्रेणी
14	7 के.एन.डी.	13	I
13	3 के.डी.	27	I
12	8 के.एन.डी.	41	I
11	9 पी.एस.डी.	56	II
10	10 के.डी.	73	II
9	13 डी.ओ.एल.	89	II
8	4 के.पी.डी.	107	III
7	5 पी.एस.डी.	125	III
6	17 के.एन.डी.	143	III
5	22 आर.जे.डी.	162	IV
4	12 के.एन.डी.	181	IV
3	10 डी.ओ.एल.	195	IV
2	2 के.एल.डी.	232	V
1	8 पी.एस.डी.	273	V

शोध क्षेत्र में प्रथम पदानुक्रम 13 से 41 के बीच है, द्वितीय पदानुक्रम अंतर 56 से 89 के बीच है, तृतीय पदानुक्रम अंतर 107 से 143 के बीच है, वही चतुर्थ पदानुक्रम 162 से 195 है जबकि पंचम पदानुसार 200 से अधिक मिलता है। जिससे 5 स्पष्ट विच्छेदन बिन्दुओं के आधार पर सेवा क्षेत्र के सेवा केन्द्रो को पांच पदानुक्रम वर्गो, ग्राम, केन्द्रीय ग्राम, सेवा केन्द्र विकास केन्द्र में विभाजित किया गया है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

1 ग्राम व उसका प्रभावः—

ग्राम निम्न स्तर के केन्द्रीय स्थान है, जहाँ निचले स्तर की सेवाऐ के साथ कुछ मध्यम स्तर की भी सेवाऐं उपलब्ध होती है जैसे आगनबाडी पाठशाला, प्राथमिक विद्यालय इत्यादि

2 केन्द्रीय ग्राम व उसका प्रभाव क्षेत्रः—

केन्द्रीय ग्राम निम्न स्तर के केन्द्रीय स्थान है, जहां निचले स्तर की सेवाओ के साथ—साथ कुछ मध्यम स्तर की भी सेवाओ का लाभ मिलता है जिसमे प्राथमिक विद्यालय व आंगनवाडी के साथ—साथ उच्च प्राथमिक विद्यालय, जल प्रदान योजना स्वास्थ्य केन्द्र आदि।

3 सेवा केन्द्र एवं उनका प्रभाव क्षेत्रः—

सेवा केन्द्रो में निम्न स्तर की सुविधाओं के साथ—साथ उच्च कोटि की सेवा और सुविधा प्रदान करते है, इनकी सेवा सुविधा की मात्रा एवं गुण निम्न स्तर के केन्द्रीय स्थान की तुलना मे उच्च कोटी होती है, द्वितीय स्तर में उप स्वास्थ्य केन्द्र, बस स्टैण्ड, मा. विद्यालय, जल प्रदान योजना आदि कि व्यवस्था होती है। इस वर्ग में 3 गांव आते है।

4 विकास बिन्दु एवं उनका प्रभावः—

तृतीय स्तर में उच्च कोटी की सेवाऐं जेसे पंचायत मुख्यालय डाक घर, उ. मा.वि., उप स्वास्थय केन्द्र, आदि इस वर्ग में 3 गांव है जिनका संचयी भार 162 से 192 है।

5 विकास केन्द्रः—

शोध केन्द्र में दो मुख्य विकास केन्द्र रावला तहसील मुख्यालय एवं 2 के.एल.डी उप तहसील मुख्यालय है जहाँ सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पुलिस थाना, पुलिस चौकी व प्रशासनिक भवन अवस्थित है।

तालिका—6.4 सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम व कार्यिक भार एवं तुलनात्मक भार

क्र.स.	सेवा सुविधाएं	कुल अधिवास जहाँ सेवा सुविधा उपलब्ध है	कार्यिक भार	तुलनात्मक भार	
1	आगंनबाड़ी पाठशाला	71	2.68	1.00	I
2	प्राथमिक विद्यालय	69	2.75	1.03	
3	जल प्रदान योजनाएं	24	7.92	2.96	
4	ग्राम पंचायतें	14	13.57	5.07	II
5	डाक व संचार	14	13.57	5.07	
6	उच्चमाध्यमिक विद्यालय	13	14.62	5.46	
7	उप पशु चिकित्सा केन्द्र	12	15.83	5.92	
8	उच्चप्राथमिक विद्यालय	10	19.00	7.10	
9	उप स्वास्थ्य केन्द्र	10	19.00	7.10	
10	बैंक	6	31.67	11.83	III
11	गैस ऐजेन्सी	2	95.00	35.50	
12	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	1	190.00	71.00	IV
13	प्रथम श्रेणी पशु चिकित्सा केन्द्र	1	190.00	71.00	
14	पशु चिकित्सा केन्द्र	1	190.00	71.00	
15	माध्यमिक विद्यालय	1	190.00	71.00	
16	सोसाईटी / बीज वितरण केन्द्र	1	190.00	71.00	
17	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	1	190.00	71.00	

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

18	प्रशासनिक	1	190.00	71.00	
19	पुलिस थाना	1	190.00	71.00	
20	पुलिस चौकी	1	190.00	71.00	
21	सासाईटी बैंक	1	190.00	71.00	
22	आयुर्वेदिक औषधालय	1	190.00	71.00	

तालिका–6.5 रावला तहसील में पदानुक्रम के अनुसार अधिवासों की संख्या

केन्द्रीयता सूचकांक	अधिवासों की संख्या	कुल अधिवास प्रतिशत में	पदानुक्रम का स्तर
1000 से अधिक	2	1.05	I
500 से 1000	3	1.58	III
100 से 500	8	4.21	III
50 से 100	52	27.37	IV
50 से कम	125	65.79	V
कुल	190	100.00	

रावला तहसील में सेवा सुविधाएं –

सेवाकेन्द्रों की अवधारणा प्रादेशिक आर्थिक नियोजन की संकल्पना में सेवाकेन्द्र एक महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक अवधारणा है। सेवाकेन्द्रों का अभिप्राय उन अधिवासों से है जो अपने चतुर्दिक क्षेत्रों में कुछ निश्चित सेवाओं की आपूर्ति करते हैं, तथा जो अपेक्षाकृत दूसरे केन्द्रों से अपनी क्रियाओं की प्रगाढ़ता एवं विस्तार में भिन्न होते हैं। विभिन्न भूगोलवेताओं ने भिन्न–भिन्न स्तर के सेवा केन्द्रों के लिए भिन्न–भिन्न नामों का प्रयोग किया है, जैसे विकासध्रुव, विकासकेन्द्र, विकासबिन्दु, केन्द्रस्थल तथा सेवाकेन्द्र आदि। सेवाकेन्द्र की अवधारणा का मूल स्रोत निर्विवाद रूप से जर्मन भूगोलवेत्ता वाल्टर क्रिस्टालर के ''केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त'' में सन्निहित है। केन्द्रस्थलों को सेवाकेन्द्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे भिन्न–भिन्न प्रकार की सेवाओं अथवा तृतीयक कार्यों के केन्द्र होते हैं, चूँकि इनकी स्थिति केन्द्रीय होती है, इसलिए इनको केन्द्र स्थल कहते हैं। ये सेवा केन्द्र एक प्राथमिक ग्रामीण अधिवास से महानगर तक हो सकते हैं। इन सेवा केन्द्रों का नवीन विकास कार्यों के प्रचार और विकास की कई नीतियों एवं कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। सेवाकेन्द्र तथा केन्द्रीय क्रियायें सम्भवतः सर्वव्यापी नहीं होती हैं क्योंकि आर्थिक विकास प्रत्येक स्थान पर एक समय में एक सा नहीं पाया जाता है। सेवाकेन्द्रों की पहचान सेवाकेन्द्रों के निर्धारण हेतु कार्यात्मक आधार अत्यन्त आवश्यक प्रेरणास्रोत होते हैं। प्राचीन समय में स्थापित कई राजनीतिक मुख्यालय अब समाप्त हो चुके हैं क्योंकि इनकी कार्यात्मक गति नष्ट हो चुकी है। एक सेवाकेन्द्र का मुख्य कार्य ही उसकी वृद्धि एवं अस्तित्व का कारण होता है।

अध्ययन क्षेत्र रावला तहसील में वर्ष 2011 के अनुसार (तालिका 6.3, 6.4 व 6.5) सामाजिक सुविधाओं के क्षेत्रीय वितरण के अन्तर्गत क्षेत्र की 14 ग्राम पंचायतों के 190 अधिवासों में 256 सेवा सुविधाऐ उपलब्ध है। जिसमें 13 कृषि से सम्बन्धित सुविधाए 164 सुविधाएं शिक्षा से सम्बन्धित है। मानवीय चिकित्सालयों की संख्या 13, पशु चिकित्सालयों की संख्या 14 है, कुल बैंकों की संख्या 6 है तथा 2 विपणन बाजार पाये गये। पंचायतवार अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि कृषिगत सर्वाधिक सुविधायें 5 तहसील मुख्यालय 8 पी.एस.डी में तथा सबसे कम कृषिगत सुविधायें 03 उपतहसील मुख्यालय 2 के.एल.डी. में है। सर्वाधिक शैक्षणिक सुविधायें तहसील मुख्यालय 8 पी.एस.डी में पायी गयी तथा सबसे कम शैक्षणिक सुविधाये 4–4 12 के.एन.डी. एवं 5 पी.एस.डी में पायी गयी। सर्वाधिक मानवीय चिकित्सायल 02 तहसील मुख्यालय 8 पी.एस.डी में एवं सबसे कम अन्य पंचायत मुख्यालयों में चिकित्सालयों की सख्या एक–एक है, जबकि अध्ययन क्षेत्र की एक पंचायत मुख्यालय 4 के.पी.डी. में कोई मानवीय चिकित्सालय नहीं पाया गया है। सर्वाधिक पशु चिकित्सालय 3 तहसील मुख्यालयों में पाये गये है, जबकि अन्य ग्राम पंचायत मुख्यालयों में पशु चिकित्सालय की संख्या एक–एक पाई गई है वही क्षेत्र की 7 पंचायत मुख्यालयों में पशु चिकित्सालय नहीं पाए गऐ हैं। सर्वाधिक बैंक सुविधाऐं में 5 है एवं सबसे कम बैंक सुविधायें उपतहसील

मुख्यालय 2 के.एल.डी. में 2 पायी गयी। सर्वाधिक विपणन बाजार सुविधाऐं तहसील मुख्यालय 8 पी.एस. डी. एवं उप तहसील मुख्यालय 2 के.एल.डी. में है।

विभिन्न भूगोलवेत्ताओं एवं समाजशास्त्रियों ने सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु विभिन्न विधितन्त्रीय उपागमों का सहारा लिया है, जिसके लिये कई कारकों को ध्यान में रखते हुए विधियों का चयन किया जाता है, परन्तु अभी तक मुख्यतः निम्नलिखित विधियों का प्रयोग सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु किया गया है जो निम्नवत् हैं।

(1) जनसंख्या आकार –

किसी भी क्षेत्र की जनसख्या वहाँ के सेवा केन्द्रों की पहचान में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। सेवाकेन्द्रों से निरन्तर सचांलित होने वाली सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं पर उन केन्द्रों की जनसंख्या आकार का अत्यन्त प्रभाव पड़ता है। सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु जनसख्या आकार एक महत्वपूर्ण कारक है इसलिये यह वर्तमान में भी सेवाकेन्द्रों की पहचान का मुख्य आधार सिद्ध हो रहा है।

(2) प्रकार्यात्मक परिमाण –

सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु प्रकार्यात्मक परिमाण भी महत्वपूर्ण कारक है। सेवाकेन्द्रों पर पाये जाने वाले प्रकायों की सख्या एवं उनका स्तर उनके निर्धारण, अभिज्ञान एवं केन्द्रीयता में मुख्य भूमिका का निर्वहन करते हैं। अतः जनसंख्या आकार के पश्चात् प्रकार्यात्मक परिमाण ही सेवाकेन्द्रों के अभिज्ञान का मुख्य आधार होता है इसी कारण वर्तमान में सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु इसका प्रयोग किया जा रहा है।

(3) प्रभाव क्षेत्र का आकार –

सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में जनसंख्या आकार व प्रकार्यात्मक परिमाण के पश्चात् सेवाकेन्द्रों के प्रभाव क्षेत्र के आकार का प्रयोग सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु किया जाता है। सेवाकेन्द्रों के स्तर निर्धारण हेतु प्रभाव क्षेत्र का आकार भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। सेवाकेन्द्रों के प्रभाव क्षेत्रों के आकार के निर्धारण हेतु उनके द्वारा सेवित जनसंख्या एवं क्षेत्रफल को आधार बनाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में सेवाकेन्द्रों की पहचान हेतु प्रमुख दो तथ्यों को आधार माना है––

1.स्थायी मानव अधिवास तथा जहाँ 2000 से अधिक जनसंख्या हो।

2.निम्नलिखित में से कम से कम दो प्रकार की सुविधायें हो जैसे – शैक्षिक, चिकित्सा, विपणन, संचार, वित्तीय, परिवहन, प्रशासनिक एवं औद्योगिक सुविधाएँ।

सेवाकेन्द्रों का पदानुक्रम –

मानकों के आधार पर सेवाकेन्द्रों को उच्च एवं निम्न वर्गों में विभाजित करने की पद्धति को पदानुक्रम के नाम से जाना जाता है। पदानुक्रम से तात्पर्य अधिवासों को उनके आकार अथवा उनके द्वारा प्रदान किये जाने वाले कार्यों के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में विभाजित कर क्रम प्रदान करने से है। ''पदानुक्रम'' शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द भ्पमतंतबील का पर्यायवाची है। भूगोल में पदानुक्रम शब्द को महत्व दिलाने का वास्तविक श्रेय वॉल्टर क्रिस्टालर को जाता है जिन्हें 'केन्द्रीय स्थान सिद्धान्त' का जनक माना जाता है।

तालिका –6.6 रावला तहसील में सेवाओं के आधार पर सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम

पदानुक्रम सूचकाँक	कोटि	पंचायतों की संख्या	सेवाऐ	प्रतिशत	पंचायतों के नाम
30 से अधिक	अति उच्च	1	32	12.50	8 पी.एस.डी
25 से 30	उच्च	1	26	10.16	2 के.एल.डी.,
20 से 25	मध्यम	2	44	17.19	10 के.डी. ,4 के.पी.डी
15 से 20	निम्न	6	108	42.19	5 पी.एस.डी.,17 के.एन.डी., 3 के.डी., 10 डी.ओ. एल, 7 के.एन.डी., 8 के.एन.डी.
15 से कम	अति निम्न	4	46	17.97	22 आर.जे.डी, 9 पी.एस.डी.,12 के.एन.डी, 13 डी. ओ.एल
		14	256	100.00	

स्रोत : कार्यालय ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी घड़साना व रावला।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

बेरी व गैरीसन महादेय के अनुसार ''कभी–कभी स्पष्ट मार्ग प्राप्त करना कठिन कार्य हो जाता है। यह विचार करना अधिक सरल होता है कि उन्हें क्रम में व्यवस्थित किया जाए अथवा पदानुक्रम को उत्तरोत्तर क्रम अथवा श्रेणीकरण किया जाये।'' यद्यपि प्रस्तावित विभाजन सदैव सुस्पष्ट नहीं होते हैं। आर्थिक रूप से पिछड़े हुए क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के प्रेरक अभिज्ञानों का प्रचार एवं प्रसार सेवाकेन्द्रों के पदानुक्रम के माध्यम से ही होता है। पदानुक्रम शब्द क्रमागत समूहों में अधिवासों के श्रेणीकरण को उनकी जनसंख्या अथवा कार्यों के आधार को अंकित करता है, अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों का विवरण तालिका 6.1 व 6.2 एवं मानचित्र 6.1 तथा 6.2 में प्रदर्शित हैं।

तालिका –6.7 रावला तहसील में जनसंख्या के आधार पर सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम

स्रोत : कार्यालय ब्लॉक सांख्यिकी अधिकारी घड़साना व रावला।

पदानुक्रम सूचकांक	कोटि	पंचायतों की संख्या	सेवाएं	प्रतिशत	पंचायतों के नाम
7000 से अधिक	अति उच्च	1	32	12ण्5	8 पी.एस.डी
6000 से 7000	उच्च	1	26	10ण्16	2 के.एल.डी.,
5000 से 6000	मध्यम	3	52	20ण्31	3 के.डी., 4 के.पी.डी., 7 के.एन.डी.
4000 से 5000	निम्न	5	86	33.59	13 डी.ओ.एल 9 पी.एस.डी., 17 के.एन.डी., 12 के.एन.डी.,10 के.डी.,
4000 से कम	अति निम्न	4	60	23.44	5 पी.एस.डी., 10 डी.ओ.एल., 22 आर.जे.डी. , 8 के.एन.डी.
		14	256	100	

अध्ययन क्षेत्र रावला तहसील में 6.7 तालिकानुसार सेवाओं के आधार पर सेवा केन्द्रों का पदानुक्रम के आधार पर सेवा केन्द्रों को पांच कोटियों में विभाजन किया है। सूचकांक 7000 से अधिक सर्वोच्च अति उच्च कोटि के अन्तर्गत 12..50 प्रतिशत सेवाकेन्द्र है, इस वर्ग में क्षेत्र का तहसील मुख्यालय 8 पी.एस.डी. सम्मिलित हैं, उच्च कोटि के अन्तर्गत 10.16 प्रतिशत सेवा केन्द्र है, इसके अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र की उप तहसील मुख्यालय 2 के.एल.डी. सम्मिलित है। मध्यम स्तर के अन्तर्गत तीन ग्राम पंचायतों के 86 सेवा केन्द्र आते है, जो क्रमशः 3 के.डी., 4 के.पी.डी., एवं 7 के.एन.डी. है। 4000 से 5000 सूचकांक निम्न कोटि के अन्तगर्त 33.59 प्रतिशत 86 सेवा केन्द्र आते है जबकि सूचकांक 4000 से कम अतिनिम्न कोटि के अन्तर्गत कुल 60 सेवाकेन्द्र है।

अध्ययन क्षेत्र रावला में 6.6 तालिकानुसार सेवाओं के आधार पर सेवाकेन्द्रों के पदानुक्रम को भी शोधार्थी ने पदानुक्रम कों पाच कोटियो में बांटा है। सर्वोच्च कोटि के अन्तर्गत एक मात्र बाजार तहसील मुख्यालय है जो कि सबसे बड़ी है, जिसका पदानुक्रमांक 30 से अधिक एवं सेवाओं की संख्या 32 तथा यहां उच्च कोटि की सेवा केन्द्रों का प्रतिशत 12.50 है। वही उच्च श्रेणी में क्षेत्र की एक ग्रम पंचायत 2 के.एल.डी. है, जो की उप तहसील मुख्यालय है, जिसमें 26 सेवाओं एवं 10.16 प्रतिशत के साथ सेवा सूचकांक 25 से 30 क्रम उच्च स्तर पर हैं। मध्यम स्तर में 20 से 25 सेवाओं में दो ग्राम पंचायतें 10 के.डी. एवं 4 के.पी.डी. समिलित है, जहां सेवाऐ 44 एवं 17.19 प्रतिशत हैं, वहीं क्षेत्र की छः ग्राम पंचायतों में 44 सेवाओं का प्रतिशत 42.19 है, जो क्रमशः 5 पी.एस.डी.,17 के.एन.डी., 3 के.डी., 10 डी.ओ.एल, 7 के.एन.डी., व 8 के.एन.डी. है, जबकि क्षेत्र में निम्न कोटि 15 से कम में 46 सेवाओ एवं 17. 97 प्रतिशत के साथ चार ग्राम पंचायते क्रमशः 22 आर.जे.डी, 9 पी.एस.डी.,12 के.एन.डी, व 13 डी.ओ.एल है।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in March 2025

मानचित्र 6.1 व 6.2

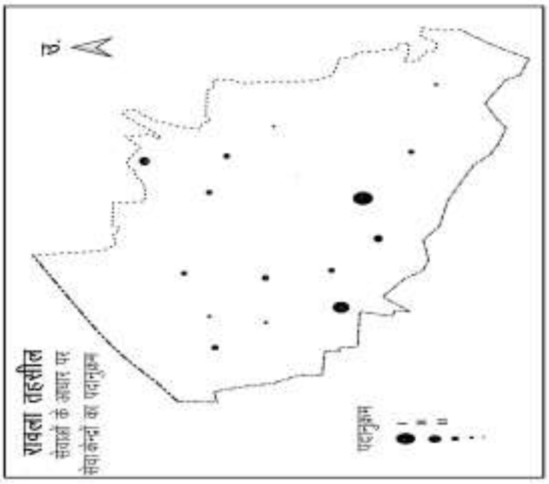

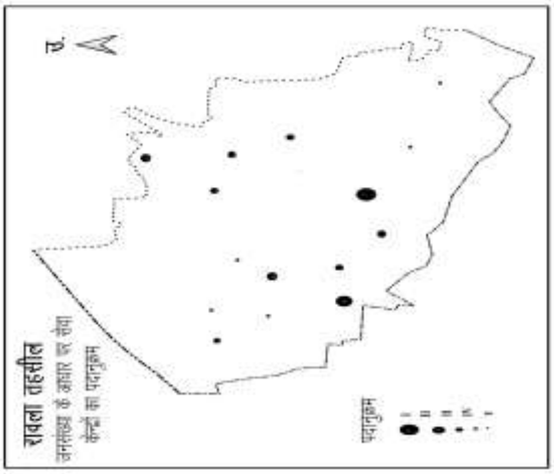

आरेख– 6.1 व 6.2

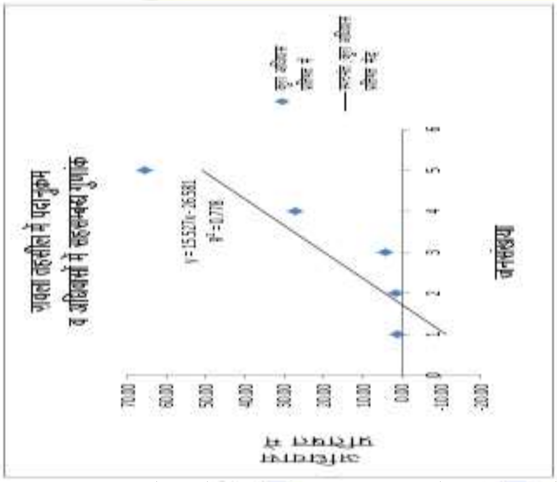

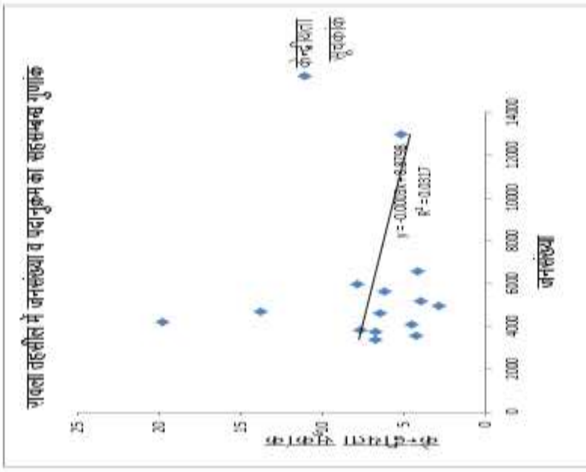

शोध क्षेत्र रावला तहसील में अधिवासों के पदानुक्रमों में उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है, अध्ययन क्षेत्र में केन्द्रीयता सूचकांक व जनसंख्या में भी उच्च धनात्मक सहसम्बन्ध देखने को मिलता है, अतः स्पष्ट है कि क्षेत्र में जैसे–जैसे जनसंख्या में वृद्धि हुई है, वैसे–वैसे अधिवासों में भी उतरोतर वृद्धि देखने को मिलती है। शोध क्षेत्र में जैसे–जैसे अधिवासों में वृद्धि आई है, वैसे–वैसे सेवाओं में भी वृद्धि आई है, फिर भी जनसंख्या वृद्धि की दृष्टि से सेवाओं में कमी देखने को मिलती है, अतः क्षेत्र में और अधिक सेवा आपूर्ति की आवश्यकता है।

निष्कर्ष –

सेवा केन्द्र वह केन्द्रीय स्थान होते है, जो आसपास के क्षेत्रों को अपनी सेवाएॅ प्रदान करते है। जहॉ पर माल सेवाओं तथा सामाजिक आर्थिक आवश्यकताओं का विनियम होता है यह स्थानीय जनसंख्या के साथ साथ केन्द्र के चारो ओर एक लगातार क्षेत्र के रूप में फैला होता है। केन्द्रीय स्थान न केवल अपनी जनसंख्या बल्कि अपने प्रदेश के निवासियों के लिए अपनी सेवाए प्रदान करते है इस बस्तियों में अन्य बस्तियों की अपेक्षा कार्यो की संख्या अधिक पायी जाती है, इसलिए इन्हे इनके कार्यों के आधार पर पहचाना जा सकता है। इन कार्यों में बेसिक शिक्षा, पुस्तकालय सुविधा, चिकित्सालय सुविधा, यातायात एवं संचार, पशु चिकित्सा संबंधी सुविधाएं, सहकारी संस्था एवं पुलिस सेवा प्रमुख है, एक केन्द्र यदि घटक कार्यों में से कम से कम कोई भी चार कार्य रखता है तो उसे केन्द्रीय स्थान कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ –

1. Singh, Jagdish (1979) "Central places and spatial organization in backward economy Region'': A study in integrated regional development U.B.B.P. Gorakhpur.
2. Singh, Jasbir (1976) "An Agriculture Geography of Haryana" vishal publishers, university campus, Kurukshetra, Haryana, India.

3. Singh, R.L. (1975) "Readings in rural settlements geography''. National geography society in India. Varanasi.
4. Singh, S. Ghose, B. "The application of Aerial-Photo Interpretation in the geomorphologocial surveys of Western Rajasthan". The Deccan geog. 7 (i) 1-13
5. Singh, R.C. (1972) "Settlement geography of Indian Desert", Delhi.
6. Singh, S.B. "UBBP Research Series no 2 rural settlement geography" A case study of Sultanpur District Uttar Bharat Bhoogol Parishad, Gorakhpur.
7. Sundaram, K.V. (1971) "Regional Planning in India'' in Symposium on Regional Planning (21st I.G.C.) Calcutta pp109-123
8. Christaller, W., Central Place in Southern Germany, Translated by C.W. Baskin, Prentice Hall., 1966, pp. 14-26.
9. Ruttan, V.W., Integrated Rural Development Programme, Spatial PerspectiveInternational Development Review, Vol. 4., 1975, pp. 6-16.
10. Arora, R.C., Integrated Rural Development, S.Chand & Company Ltd., New Delhi, 1976, pp. 3-4.
11. Shah, G.L.,Spatial Organization of Rural Settlement in the Mountainous Parts of U.P. – A Study in Integrated Area Development Symposium on Geography & Regional Planning (Abstract), University of Gorakhpur, May 18-19, 1979, p. 9.
12. Singh, M.B., &Dube, K.K.,Regional Development Planning, Tara Book Agency, Varanasi, 1999, p. 148.
13. Brush, J.E, &Racey, B.H.E., Rural Service Centres in South-Western Wisconsin & South England, TheGeographical Review, Vol. 45, 1995, pp. 559-565.
14. ओझा, पुश्पेन्द्र,ग्रामीण स्वास्थ्य, कुरूक्षेत्र, मई 1999, पृ0 32A
15. Kuppuswami, B., Social Development of India, p. 20.
16. माथुर, जगदीश शरन, भारतीय सड़क परिवहन व्यवस्था, योजना, अक्टबूर, 1990, पृ0 28।
17. Christaller, W., Central Place in Southern Germany, Translated by Barke in Prentice Hall, Inc. Engle Wood Cliff, New Jersey, 1966.
18. Berry, B.J.L. &Garrison, W.L.,The Functional Basic of the Central Place Hierarchy, Economic Geography, Vol. 34., 1958, pp. 145-154.